

शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व भारतीय संस्कृति के मूल में समाहित है। भारत विविधताओं का देश है। अनेक धर्मों, अनेक पंथों और अनेक सम्प्रदायों के लोग यहां निवास करते हैं। भौगोलिक विभिन्नता, सांस्कृतिक विविधता, भाषा सम्बन्धी विविधता हमारे देश में हैं किन्तु यहां के सभी निवासी शान्तिपूर्ण ढंग से जीवनयापन करते हैं। इसके पीछे भारत की आध्यात्मिक चेतना कार्य करती है। चौरासी लाख जीव यौनियों में आत्मा समान है। आत्मा के स्तर में किसी में कोई भेद नहीं है सभी आत्माएं समान है। विभिन्नता शरीर के स्तर पर है। यही शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का मूल है। हम सभी जगह आत्मदर्शन करते हैं। इसलिए किसी प्राणी की हिंसा नहीं करते। हमारे भीतर यह भावना रहती है कि जैसे दुःख हमें प्रिय नहीं है वैसे चौरासी लाख यौनियों में किसी भी प्राणी को दुःख प्रिय नहीं है। इसलिए दुःख किसी को नहीं देना चाहिए। भारतीय विचारधारा कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास करती है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त है कि जो प्राणी जैसा कर्म करता है उसका फल भोगने के लिए उसे जन्म ग्रहण करना पड़ता है। यदि अच्छा कार्य किया है तो फल भी अच्छा प्राप्त होगा और कर्म बुरा किया है तो फल भी बुरा प्राप्त होगा। इसलिए मानव को बुरा कर्म नहीं करना चाहिए। बुरा कर्म ही समाज में अशान्ति फैलाता है। धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक अपराध के द्वारा समाज व्यवस्था को भंग करने का जो प्रयास करते हैं वह बुरा कार्य करते हैं। धर्म सदैव अच्छे मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। धर्म आत्मा का स्वभाव है। धर्म हमें वसुधैव कुटुम्बकम् का पाठ पढ़ता है। धर्म जोड़ता है तोड़ता नहीं। धर्म शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की शिक्षा देता है। यदि देशों के बीच शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व कायम रहे तो न तो सीमा विवाद हो और न ही आंतरिक अशांति। अतः शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व विकास का सूत्र है। सबका साथ, सबका विकास शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व से ही सम्भव है।

समता भाव शांति की अवस्था है। कषाय का न रहना समता भाव है। मध्यस्थ भाव रखना समता है। सुख दुःख में समान रहना, एक स्थिति में समता भाव है। गीता में इसे स्थितिप्रज्ञ

कहा गया है। प्रियता और अप्रियता में समभाव रखना चाहिए। यह एक उत्तम गुण है। राग—द्वेष में रहना अशांति को जन्म देना है। शांति आत्मा का गुण है। शांति हमें प्रिय है। राग—द्वेष बाहर से आरोपित भाव हैं। सोने से मिट्टी को अलग कर देने पर सोना चमकने लगता है। इसी प्रकार मानव में शांति आ जाने पर उसका चरित्र भी चमकने लगता है। यह अवस्था आत्मा की अपनी स्वाभाविक अवस्था है। कारण और कार्य के अनुसार सृष्टि चलती है। यदि बुरा कर्म किया जाता है तो फल के रूप में भी बुराई ही प्राप्त होती है और यदि अच्छा कार्य किया जाता है तो भलाई प्राप्त होती है। अच्छा और बुरा कर्म करना मानव के अपने अधीन है। समता, सहअस्तित्व, शांति, सहनशीलता अच्छे गुण हैं। सहनशीलता मानव का सबसे बड़ा गुण है। जिस मानव के अंदर यह गुण रहता है वह महान कहलाता है। जो व्यक्ति जितना सहन करके चलता है उसका चरित्र उतना ही ऊंचा होता है। चरित्र वह हीरा है जो टूटकर जुड़ता नहीं। चरित्र निर्माण मानव की स्वाधीन प्रक्रिया है। चरित्र ही ऐसा है जिसे मानव गढ़ सकता है। यह उसके अपने अधिकार का विषय है। किसी व्यक्ति को किसी बुराई का परित्याग करने को कहा जाता है तो अक्सर उत्तर मिलता है कि क्या करूं मैं मानता हूं कि यह कार्य गलत है किंतु मेरी आदत पड़ गई है, आदत छूटना बड़ा कठिन है। कई तो यहां तक कह देते हैं कि मैंने इस आदत को त्यागने का खूब प्रयास किया किन्तु मैं इसे छोड़ नहीं सका। ये सारी बातें जो अक्सर आया करती हैं, जिन्हें सुनकर मैं हैरान रहता हूं। मैं एक बात पूछता हूं ऐसे व्यक्तियों से कि भाई तुम अपनी आदत को बदल नहीं सकते तो बताओं क्या बदल सकते हो? चांद—सूरज बदल सकते हो या धरती आसमान को बदल सकते हो? क्या अपने एक सफेद बाल को भी काले बाल में बदल सकते हो? वास्तविकता यह है कि मानव कुदरत के सिद्धान्तों को बदलने में नितांत असमर्थ है। हां एक ही बात व्यक्ति के अपने हाथों में है, और वह है अपने आपको बदलना। यह कैसी विडंबना है कि जो मानव कर सकता है उसके लिए ही कहा करता है कि मैं यह नहीं कर सकता।

चरित्र निर्माण के संबंध में पहली आवश्यकता है व्यक्ति अपनी आत्म—शक्ति को पहचाने। अपने आप में एक अनंत शक्ति का स्रोत निरंतर प्रवाहित है, इस ध्रुव सत्य को आत्मसात कर लिया जाए। सहनशीलता का अपने आप में अनुभव एक ऐसी जबर्दस्त प्रक्रिया है कि वह जीवन के

प्रति समस्त दृष्टिकोण को बदल देती है। एक जगह जन्म लेने और पनपने वाले व्यक्तियों में भी बड़ा भारी अंतर पाया जाता है। एक शेर की तरह जीता है और दूसरा गीदड़ की तरह दबा-दबा रहता है। आखिर यह अंतर क्यों? विभिन्न जीवन धाराओं का गहराई तक अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष सामने आता है कि विभिन्न जीवन प्रक्रियाओं की मौलिक असमानता का कारण क्षेत्र, वातावरण, खान, पान, पहनावा मूल नहीं होकर मौलिक कारण आत्म-शक्ति का प्रकाट्य संबंधी अंतर है। अतः सभी को शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का पाठ जीवन में उतारना चाहिए।